धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

सितम्बर - 2010

* हानि परिशोध

* संगत की रंगत

* सुख अनुराग की लीला

* अलोचना हितकर है

* *आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखाती है*

* अंधविशवास का महाकुंभ

* शुभ संग्राम

हानि परिशोध

देव बाणी

"किसी के लिए हानि परिशोध के साधनों को कितने अरसे तक करते रहने की ज़रुरत है।" भगवान देवात्मा ने फरमाया कि इसके लिए कोई खास मयाद निश्चित नहीं हो सकती, बल्कि उसकी मियाद हानिकर्ता की हानि की मिक़दार और इस हानि की गहराई और उसके बुरे नतीजों पर निर्भर करती है, और इसी लिए किसी प्रकार के सच्चे और पूर्ण हानि परिशोध के लिए जिन दो बड़ी बड़ी बातों का पूरा होना ज़रुरी है, वह यह हैं कि:-

प्रथम :- किसी जन ने अपनी जिस किसी बुरी या नीच क्रिया से किसी दूसरे जन की किसी किस्म की हानि की हो, उसका सच्चा बोध उत्पन्न होने पर वह उसके लिए क्षमा, प्रार्थना से लेकर अपने अपराध वा पाप की हानि के अनुसार वह सब दण्ड और सेवा आदि विषयक साधन ग्रहण करे और जिनका ग्रहण करना उचित और अवश्यक हो, और उन्हें तब तक जारी रखे, जब तक हानि प्राप्त जन की हानि वा पीड़ा, जहां तक हालात में सम्भव हो, दूर की जा सकती है, वहां तक दूर करे।

द्वितीय :- उसने अपनी जिस नीच शक्ति के वशीभूत होकर कोई हानिकारक क्रिया की हो, उसके बुरे रुप को सन्मुख ला लाकर, वह तब तक उसके प्रति अपने भीतर घृणा और दुख अनुभव करने वाले साधन जारी रखे,जब तक उस नीच शक्ति के अधिकार से उसका उद्धार न हो जाये, और फिर उसका वह नीच भाव उससे ऐसी नीच क्रिया न करा सके।

धर्म जीवन

खण्ड 23 अंक 9

सितम्बर - 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

संगत की रंगत

कुछ ठोस सच्चाईयां ऐसी होती हैं कि जिनको जानकर भी हम नहीं जानते। मान्सिक रूप से हमें पता होता है, इसमें हमारा लाभ है और इसमें हानि, परन्तु प्रैक्टीकल रूप में हम इस ज्ञान का लाभ नहीं उठाते। हम सब जानते है कि जैसी संगत, वैसी रंगत। परन्तु, इस सचाई का जीवन में बहुत कम लाभ उठाने का यत्न करते हैं। अकसर अच्छी वा बुरी संगत का हमें एहसास तक भी नहीं होता। न बुरी संगत से गरेज करते है और न ही अच्छी संगत की जरूरत वा भूख महसूस करते हैं।

वास्तव में हमारी दिमाग़ी, रूहानी वा शारीरिक विरासत के बाद हमें बनाने वा बिगाडने में संगत मुख्य कारण है। हम जो कुछ हैं और जो कुछ ग़ल्तियां वा ख़राबियां की हैं, उसमें अधिकतर हमारी संगत का हाथ है। संगत का प्रभाव सूक्ष्म वा अदृष्य होकर भी बहुत ज़बरदस्त होता है। यह हमारे जीवन के लक्ष्य तक बदल देती है। हमारे इरादे, हमारी योजनाएं बदल देती है।

संगत का प्रभाव बहुत व्यापक है। विरासत के अनुसार हम संगत की ओर आकर्षित होते हैं। जैसे वायु के अनुकूल ही पौधे होते हैं, उसी प्रकार अपने चौतरफा वातावरण के प्रभाव से ही हम उन्नत वा अवनत होते हैं।

युनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात की संगत ने संसार को अफलातून दिए। अफलातून की संगत ने अरस्तु जैसे महान दार्शनिक दिए।

"तर गया कबीर जुलाहा, सन्तों का संग करके" का एक एक शब्द पुकार पुकार कर अच्छी संगत के गुण गा रहा है। एक साधरण जुलाहे के घर पलकर, महान और योग्य महात्मा की संगत से यह बच्चा मानवता का रहबर, दार्शनिक, कवि, ग्रन्थों का रचिता, संप्रदाय का संस्थायक, एक महान व्यक्तित्व का मालिक बन गया। उन्होंने स्वंय संगत की छाप अपने प्रसिद्ध दोहे में इस प्रकार अंकित की है।

"साकत संग न कीजिए, दूरों जाईए भाग,
बासन कारों परसिय, तो कुछ लागे दाग।"

जिस प्रकार कोयले के पास से गुजरने से भी कालिख लग जाती है, सूक्ष्म और अदृष्य घूआं वा ताप की तरह हमारे अस्तित्व में से भी प्रभाव निकलते हैं और वह भोपाल गैस कांड की तरह बहुत ज़ोरदार होते हैं।

दूसरी ओर कहा गया है: -

"सोई चन्दन हो रहे जो रहे चन्दन के पास।" चन्दन की महक अपने चौतरफा वातावरण को अपनी सुगन्ध से सुगन्धित कर देती है, इसी प्रकार उच्च, नेक और महान पुरूषों के प्रभाव मनुष्य के जीवन में इन्कलाब ला देते हैं। नीच, दुष्ट और दुर्बल मनुष्यों के प्रभाव नेक मनुष्यों को अपनी लपेट में लेकर कुकर्मी, वा नीच बना देते हैं।

भारत के मुग़ल बादशाहों के कई नौकर वा गुलाम, बादशाहों की संगत में रहते रहते इतनी योग्यता प्राप्त कर लेते थे कि वह देश के बादशाह बनकर देश की बागडोर सम्भालने के योग्य बन जाते थे। इस प्रकार 4 - 5 गुलाम एक के बाद एक बादशाह बनें।

डाक्टर मथुरा दास जो भारत के पहले आंखों के प्रसिद्ध सर्जन थे, उनके अधीन काम करने वाले कुछ कलर्क वा कम्पाऊडर और अन्य सेवक, किसी ने सुरमें, किसी ने ऐनकों, किसी ने दवाईयों आदि की दुकानें खोलकर अपनी गरीबी से मुक्ति प्राप्त कर ली और ऊंचे जीवन स्तर के स्वामी बन गए।

जैसे चल रही मशीन के साथ जंग लगा हुआ चाकू सैंकण्ड में ही चांदी की तरह चमकने लगता है, वैसे ही महान जीवन के स्पर्श से एक एक नीच वा तुच्छ व्यक्ति (यदि उसमें कुछ भी योग्यता हो) नीचता त्याग कर उच्च जीवन को प्राप्त करने के योग्य बन जाता है।

लगातार वा निरन्तर उच्च संगत से विशेष प्रभाव पाकर एक एक योग्य जन बहुत अंगों में भला कर लेते हैं। लकड़ी के साथ मिलकर लोहा भी तैर जाता है और पानी में डूबने से बच जाता है। उसी प्रकार भली संगत जीवन को नया मोड़ दे देती है। उसे बर्बाद होने से बचा लेती है।

कुछ ऐसी ठोस उदाहरणों से यह सत्य भली भान्त स्पष्ट हो जाएगा कि कई योग्य जनों में चन्द मिन्टों की संगत ने क्या इन्कलाब ला दिया।

बाल्मीकि राहजनी वा डाकू का काम करते थे। एक बार कुछ साधुओं को लूट लिया। साधुओं ने उसे उपदेश दिया कि जिनकी खातिर तूं लुटेरा वा डाकू बनकर पाप कमाता है वह तुम्हारे पापों की सज़ा तेरे साथ बांटेंगे? घर में जाकर घर में पूछा तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया कि हम तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों भुगतेंगे? इस उपदेश ने बाल्मीक की आंखें खोल दी और उसे महान ऋषि, उपदेशक वा समाज सुधारक बना दिया। वह भारत के इतिहास में अमर हो गए।

मैं अभी समाज में नहीं आया था। मेरी उमर 19 - 20 वर्ष की होगी, परन्तु मैं बात बात पर गाली निकाल देता, और मुझे कुछ पता नहीं चलता था। एक बार मुझे देव समाज के भद्र सेवक के साथ भटिंडा पैदल जाकर सभा सुनने का मौका लगा। हम 9 - 10 मील पैदल चलकर गए। रास्ते में अपने स्वभाव अनुसार बातों बातों में गालियां निकालता गया। उस भद्र सेवक ने कहा "आपको गाली निकालना शोभा नहीं देता" पहले तो मैंने कहा कि मैंने कब गाली निकाली है, फिर उनके याद करवाने पर मुझे समझ में आया। मुझे बड़ी शर्म आई। मैं कालिज में पढ़ता था। उनकी संगत से

मैंने उस दिन के बाद गाली नहीं निकाली। अब उस बात को 63 वर्ष हो गए, अब तक कई और लोगों से भी गाली छुड़वाई। 2-4 मिन्ट की एक भले पुरुष की शिक्षा ने मेरा फूहड़पन छुड़वा दिया। यह भले पुरुष गोनियाना मण्डी के श्रीमान बाबू राम जी थे।

इसी प्रकार उच्च लोक वासी श्रीमान हरनाम सिंह जी मल्लेका संगत करवाने हमारे घर गोनियाना मण्डी आए हुए थे। सुबह जब वह ज़रूरत के लिए बाहर गए। मैं पानी की गड़वी लेकर उनके साथ चल पड़ा। रास्ते में उन्होंने पूछा कि "भाई अब तुम बी. ए. पास हो गए हो, आगे क्या करने का विचार है। मेरा विचार वकील बनने का था, क्योंकि जब मैं प्राईमरी स्कूल में था, तो मेरे पिता जी शौक से मुझे बुलाते, "बलदेव सिंह सिद्धू, बी. ए., एल. एल. बी. पलीडर" उसी अनुसार मैंने श्रीमान जी को कह दिया। उन्होंने चलते चलते मुझे वकालत के पेशे की हानियां बताई कि वकील को तो सदा झूठ बोलना पड़ता है, यह पेशा नहीं अपनाना। मुझे उनकी दलीलें बहुत पसन्द आई। यदि मैं वह पेशा अपना लेता तो शायद ही मैं गुरू महाराज के अद्वितीय मिशन से जुड़ सकता। यदि जुड़ भी जाता, तो जो मेरा भला अब हुआ है, वह कभी नहीं हो सकता था। देव समाज के सच्चे साधु की चन्द मिन्ट की संगत ने मुझे भले का मार्ग बता दिया।

मेरी उमर 24-25 वर्ष की होगी कि मैं भटिंडा के रेलवे स्टेशन से सीधा देव समाज मन्दिर की ओर जा रहा था। मन्दिर निकट ही था तो समान भी मैंने उठाया हुआ था। कोई 100 गज, चलकर मेरे हाथ थक गए और मैं सड़क की एक ओर सुस्ताने लगा। उस समय दायं हाथ को बहुत खुला मैदान पड़ा था। शायद उसे गांधी ग्राऊंड कहते थे। वहां से डेढ़ सौ गज पर रामलीला हो रही थी। मेरा ध्यान उधर चला गया। लक्ष्मण जी के मूर्छित होने का सीन चल रहा था। रामचन्द्र जी उस पर बहुत दुख और व्याकुलता पूर्ण बोल रहे थे। राम चन्द्र जी का ब्यान मेरे हृदय को हिला रहा था। वहां खड़े खड़े मेरा ध्यान अपने भाई की ओर गया। मेरा हृदय पिघल गया और वहां खड़े खड़े अपने मन में यह प्रण लिया कि कभी मैं, अपने भाई से नहीं लड़ूंगा। ज़मीन जायदाद के बंटवारे के समय उससे कोई बहस वा झगड़ा नहीं करूंगा। उसके साथ कभी दूरी वा सम्बन्ध खराब नहीं करूंगा। 4-5 मिन्ट का रामचन्द्र जी का वह विलाप मुझे सदा याद रहा और भाई ने जब अलग होने का इरादा ज़ाहिर किया तो भी मुझे यह बात याद रही और बटवारे के समय भाई ने जो मांगा, मैंने उन्हे मुंह मांगे, खेत, बाग़, टियूबवैल, कोठी आदि का सारा साज समान खुशी 2 दिया। हमारे से बड़े बहनोई उस समय हाज़िर थे। वह मुझे समझाते रहे कि अपनी पत्नी से भी सलाह ले ले, तूं क्या कर रहा है, परन्तु मैंने अपने भाई की मांग के आगे उनकी बात भी नहीं सुनी और खुशी खुशी सब उनकी इच्छा के अनुसार भाई को दे दिया। मेरे बहनोई जो ज़ैलदार थे, मार्किट कमेटी के चेयर मैन थे, जिनको सरकार ने उनकी योग्यता को देख कर कई मुरब्बे ज़मीन भी दी थी, वह दिमाग़ी इन्सान थे, प्रभावित होकर कहा था, कि "भाई, तुम्हें देव समाज की सभा करवाने का हक

है, तूं केवल उपदेश नहीं झाड़ेगा, पहले आप अमल करेगा।"

चन्द मिन्टों की भली तकरीर ने मुझे सदा के लिए प्रभावित कर दिया और मुझे भाई के साथ केवल स्वार्थ को लेकर वैर विरोध कमाने से बचा दिया।

एक बार 20 - 25 वर्ष की उमर में ही जब मैं समाज की संगत में आ चुका था, गोनियाना मण्डी के 70 - 75 वर्ष के एक नेक दिल इन्सान को मैं उनके पैर पर बन्धी पट्टी का कारण पूछा उन्होंने बताया कि मैं गांव में गया और वहां बारिश होने लगी, पानी गांव वाले घर में इकट्ठा हो गया। मैं कस्सी लेकर पानी को बाहर निकालने की कोशिश करने लगा। "जिसका काम, उसी को साजे" मैं बनियां, कभी कस्सी चलाई नहीं थी। जमीन बहुत खुश्क और सख्त थी, जिससे पैर जख्मी हो गया, इसलिए पट्टी बांधी है। मैं देव समाजी होकर कहा कि गांव से शराब लेकर, उसमें भिगोकर पट्टी बांधनी थी। उन्होंने जो उत्तर दिया, वह आज तक मेरे दिल पर अंकित है। उन्होंने कहा कि जिस चीज़ से सात पुश्तें बर्बाद हो जाती हैं, उसको न मैं लगाना ठीक समझता हूं और न लेना ठीक समझता हूं। उनकी शराब के प्रति घृणा ने मुझे अन्दर तक हिला दिया। मैं देव समाज का कर्मचारी होकर शराब के प्रति उतनी घृणा न बना सका, जो वह बजुरग को सनातनी होकर थी। उनकी इस बात ने शराब के प्रति मेरी घृणा को बहुत गहरा कर दिया। मैं उनके वाक्य को कभी नहीं भूला और फिर कभी ज़ख़्मी को शराब की पट्टी बांधने की सलाह नहीं दी। उस बजुरग के प्रति आज भी मेरा सिर झुक रहा है। मैं देखता हूं कि उनके 3 - 4 बेटे हैं, पोते है, उनके घर में शराब आज तक नहीं घुस सकी।

एक तरफ यह बात शत प्रतिशत सत्य है कि संगत अपनी रंगत चढ़ाती है, दूसरी तरफ यह भी सत्य है कि अच्छी संगत का दुनियां में अकाल पड़ा हुआ है। घर से बाहर निकलो पैर पैर पर बुरी संगत है। परन्तु हमें जल्दी किए इसका आभास नहीं होता। हमें स्वंय भी अच्छी वा बुरी संगत का अन्तर समझने की अवश्यकता बोध नहीं होती। इसी कारण भली संगत की कोई भूख महसूस नही होती।

गुरू महाराज ने फरमाया है, "दुर्जन वास से निर्जन वास अच्छा है" निर्जन वास हम कर नहीं सकते, अच्छी संगत की भूख नहीं, इसलिए बुरी संगत से हानि उठाना अवश्यम्भावी है। भली संगत की हमें खुराक जितनी अवश्यकता है। पहले हमें इस सचाई को याद रखने और मन मारकर अच्छी संगत में वास करने की अवश्यकता हे। कुछ समय ऐसा करके हमें अच्छी संगत की कदर जाग जाएगी। लम्बा समय उच्च वा भली संगत में रहने से, योग्यतानुसार, संगत की भूख भी जाग जाएगी और हम सुरक्षित हो जाएंगे।

परम पू० भगवान देवात्मा के लासानी प्रभाव दायक वातावरण की संगत सर्वोच्च संगत है। इस अन्दर हमारी सब सम्भव सुरक्षा होने की, विकास होने की सम्भावना है। ऐसी संगत से मुल्यवान कोई वस्तु नहीं।

बलदेव सिंह

सुख अनुराग की लीला

दुर्भाग्य से प्रत्येक मनुष्य ही सुख अनुरागी है, वह सुख अनुराग को विरासत में लेकर जन्म लेता है। परन्तु अंह, स्वार्थ, मान, बड़ाई, प्रशंसा, ईर्षा द्वेष की विरासत जितनी अधिक मिल जाती है, उतना ही अधिक वह जन अपने लिए वा औरों के लिए हानिकारक बन जाता है। गहरा स्वार्थ मनुष्य को चाटूकार बना देता है, दूसरों की झूठी प्रशंसा के पुल बांधने और अपना स्वार्थ सिद्ध करने में वह ज़िन्दगी लगा देता है, प्रशंसा प्राप्त करने का सुख दूसरों को अपने जाल में फसा लेता है इसी प्रकार अंह की गहरी विरासत एक एक जन को अपनी प्रशंसा आप करने की कैद में जकड़ लेती है। ईर्षा द्वेष के मकड़जाल में फंसकर वह दूसरों को शारीरिक, मान्सिक वा हार्दिक आघात पहुंचाने के लिए मज़बूर हो जाता है। दूसरों के सुख, मान और जान की हानि उसके पत्थर दिल को भी पिघला नहीं सकती।

मान बड़ाई वा प्रशंसा की गुलामी की कमज़ोरी को समझकर एक एक जन अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए एक एक जन के मुहं पर उनकी झूठी प्रशंसा के पुल बांध देता है और सुख अनुरागी मनुष्य उसको सत्य मानकर अपनी ग़ल्त कीमत लगा बैठता है और उसके जाल में फंसकर उसकी इच्छानुसार चलने के लिए मज़बूर हो जाता है और कई बार तो वह बहुत हानिकारक फैसला लेने में भी साथी बन जाता है। ऐसे स्वार्थी जन ही भोले भाले मनुष्यों को इस प्रकार की सुख की चाट देकर अपना मतलब सिद्ध करते हैं।

हमारा देश क्यों गुलाम हुआ? अंग्रेजों ने भारतवासियों की इसी कमज़ोरी का लाभ उठाया। जब भी कोई रहस्य जानना होता, तो एक एक जन की झूठी तारीफ करते, उसे लालच देते और अपना मतलब निकालने के बाद उसे जान तक से भी मार देते। अंग्रेज मनुष्य के मनोविज्ञान को खूब समझते थे। झूठी प्रशंसा पाने वा अपने स्वार्थ के लिए अपने ही देशवासियों ने अपना देश विदेशियों को बेच दिया। इस गुलामी से छुटकारा पाने के लिए स्वार्थ रहित वा देश प्रेमियों ने जो जो आघात वा दुख सहे, जो बलिदान दिए, उसकी गाथा हृदय विदारक है।

ईर्षा की भयानक आग, मनुष्य को दूसरों की उन्नति, दुसरों के गुणों, योग्यताओं, उन द्वारा किए महान कामों को न केवल देखने नहीं देती, बल्कि वह अन्दर से कुढ़ता हैं, फिर वह उेसे जनों की दूसरों के पास निन्दा करके सन्तुष्टि पाता है, ऐसा भाव रख कर दूसरों के गुणों के प्रति सम्मान वा श्रद्धा तो क्या पैदा होनी थी, उल्टा वह अपने जीवन मे बेहतरी के सब रास्ते बन्द कर लेता है।

द्वेष भावना के गुलाम मनुष्य के हाथों किसी की भी जान, माल, सम्मान, सुरक्षित नहीं। अपने किसी अनुचित सुख पर चोट लगने से एक एक उपकारी, हितकारी की भी जान लेने में ऐसा जन पीछे नहीं हटता, या उन्हें इतने दुख पहुंचाता है कि वह उसकी जान को रोते रहते हैं। माता पिता वा अन्य निकटी सम्बन्धियों के प्रति भी संवेदान हीन हो जाता है, उनको दुख पहुंचाकर खुशी अनुभव करता है। यह सिलसिला घरों में ही नहीं, समाजों देशों में भी चल रहा है। किसी भद्र जन की निन्दा करके, दूसरों में उसके प्रति ज़हर भरकर वह तृप्ति पाता है, इन्हीं नीच भावों के कारण बड़े बड़े महान कारज नष्ट हो जाते हैं। श्रद्धेय श्री कनल जी ने एक पैम्फलेट ही लिख दिया था कि "महान कारज कैसे नष्ट हो जाते

हैं।" मुख्य रूप से ईर्षा, द्वेष, घमंड, स्वेच्छाचारिता, नीच घृणा, स्वार्थ की प्रकृति जितनी अधिक काम करने वालों में बढ़ जाती है, उतना ही वह महान कारजों के लिए प्रलय लेकर आते हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने अद्वितीय त्याग खण्ड खण्ड में इस प्रकार फरमाया है:-

"जिन मनुष्यों में अंह का प्रबल भाव वर्तमान होता है, उन्हें यह अपने महा निकृष्ट और महा हानिकारक स्वभाव के अनूसार सत्य और शुभ के पथ से अन्धा कर देता है। ऐसे लोग अपनी इस अन्धता के कारण केवल यही नहीं कि किसी देवात्मा वा कुछ सात्विक गुण धारी किसी अन्य आत्मा के सच्चे गुणों को देखने के योग्य नहीं रहते किन्तु यदि उनके सम्मुख किसी ऐसे जन के किसी शुभ गुण का वर्णन होता है, तो उसे वह अपने कानों से भी सुनने में कष्ट मालूम करते हैं, और इस कष्ट के कारण उसके उस गुण को या तो सिरे से ही स्वीकार नहीं करते या उससे भी बढ़कर उस पर अपनी ओर से उल्टा कोई झूठ मूठ अवगुण वा दोष मढ़ देते है। और ऐसे पाप से अपने अंह भाव की तृप्ति करके फूलते और खुश होते हैं।"

ऐसे जन किसी घर में हों, संस्थाओं में हो, समाजों वा देशों में हो, अपनी नीच प्रकृति से वहां नर्क पैदा करते हैं। एक जन को यह कहते सुना गया कि "मैंने एक मां के बच्चों में उनकी मां के प्रति इतना ज़हर भर दिया है कि अब वह उसका मुंह देखना पसंद नहीं करेंगे।" मनुष्य प्रकृति का कैसा घिनौना रूप है!

हमारे राजनैतिक नेता भी इसी प्रकार के हथकण्डे प्रयोग में लाते हैं।

परन्तु सौभाग्य से जिन जनों को नीच भावों की प्रकृति अधिक प्रबल रूप में नहीं मिलती, और उन्हें अच्छा वातावरण मिल जाए तो उनके विकास का मार्ग खुल जाता है।

नशा न पीने वालों की संगत से बहुत से मनुष्य नशे से बच जाते हैं, मांसाहार से बचे हुए जनों की संगत मांसाहार से बचा देती है। परोपकारी जनों की संगत कुछ ना कुछ सेवा करने की ओर प्रेरित करती है।

हमारा सौभाग्य है कि हमें परम पू० भगवान देवात्मा, जो सर्व हित सम्पादक हैं, उनके पैदा किए हुए देव प्रभाव दायक वातावरण को पाने का शुभ अवसर मिला है। इस वातावरण में ही कुछ अधिकारी जनों को अपनी नीच प्रकृति को अपनी अपनी योग्यतानुसार निजात पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसी वातावरण की बदौलत ही एक एक जन ने अपने घमंड भाव को देखा और निरन्तर साधनों द्वारा यह पुस्तक लिखी "नीच जीवन पर चिन्तन" इस पुस्तक का पाठ एक ओर पू० भगवान देवात्मा की महिमा को दर्शाता है कि उनके ही देव प्रभावों में यह करामात है कि वह एक एक जन अपनी नीचता देखने वा उसकी एक एक घटना को दूसरों के सामने पुस्तक के रूप में पेश करने के योग्य हो सके।

एक एक जन ने "पश्चाताप के आंसू" नामक पुस्तक में अपने नीच जीवन पर पश्चाताप करके एक नया इतिहास रचा है।

दुर्बल मनुष्य के वश की बात नहीं, यह गुरू के देव प्रभाव ही हैं, जो ऐसे करिश्में करके दिखाते हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने मुझमें देव जीवन का विकास खण्ड- 1 में फरमाया है:- "मैं तुम्हारे लिए एक ज्योति लाया हूँ तुम मुझ से जुड़ो और उस ज्योति को लाभ करो कि जो मुझ में हैं।" परम पू० भगवान देवात्मा ने विशेष रूप से अपने अद्वितीय कारज़ में काम करने वालों के लिए

फरमाया है:- "जिन्हों ने अपने आप को मेरे मिशन के लिए भेंट करके, मेरी खुशखबरी के प्रचार और आत्माओं के उद्धार और उन्हें मेरे साथ जोड़ने का ब्रत लिया है, उनके लिए यह खास ज़रूरी है कि वह अपनी पुरानी विकार-युक्त और अपवित्र अवस्था से पूर्ण मोक्ष लाभ करके इस बात का सबूत दें, कि वह मुझे अपनी कुल बातचीत, कुल चाल ढाल और बृताव के द्वारा सबसे बढ़कर जगह देते हैं, और मेरे बाद कुल प्रचारकों को प्रेम करते हैं और उनके साथ किसी प्रकार का द्वेष वा ईर्षा भाव नहीं रखते, और किसी को अपने से बेहतर वा उन्नत होता देखकर कुढ़ते नहीं, किन्तु खुश होते हैं, और अपने नाम वा पद् आराम वा किसी और बात को सन्मुख रख कर मिशन की सच्ची महिमा और उसके इन्तज़ाम के सम्बन्ध मे कोई ख़राबी वा विघ्न नहीं पैदा करते हैं।"

धन्य हैं सत्गुरू, हमारी मनुष्य प्रकृति का कैसा अद्वितीय मनोविज्ञानिक अध्ययन!

काश! हम उनकी रोशनी को पाकर अपनी अपनी प्रकृति को समझ सकें और कुछ न कुछ अपने नीच सुखों से निजात पा सकें।

अगले अंक सें में हम कोशिश करेंगे कि एक एक नीच सुख अनुराग के विषय में परम पू० भगवान देवात्मा की शिक्षा को इस पत्रिका में दे सकें ताकि उसके अनुसार हम अपनी अपनी प्रकृति का अध्ययन कर सकें।

सुरजीत बराड़

कुसंगति

रोम में एक अत्यंत ख्याति प्राप्त चित्रकार था। उसे सजीवन चित्र बनाने में दक्षता हासिल थी। वह प्राय: चित्रकारी में नवीन प्रयोग करता रहता था। और उसके प्रयोग हमेशा प्रशंसा पाते थे। एक दिन उसके मन में विचार आया कि वह ऐसे व्यक्ति का चित्र बनाए जिसके चेहरे पर भोलापन, निष्कपटता, सरलता और दया भाव का स्पष्ट प्रदर्शन हो। उसी दिन चित्रकार ने ऐसे निष्पाप व्यक्ति की खोज आरंभ कर दी। वह कई शहरों में गया, मंदिर-मस्जिद में गया, अंतत: उसे एक गिरजाघर में एक बालक मिला, जो उसकी कल्पना के सर्वथा अनुरूप था। चित्रकार ने उस बालक को अपने सामने बैठाकर उसका हूबहू चित्र बनाया। उस सजीव कलापूर्ण चित्र की इतनी प्रतियां बिकी कि चित्रकार मालामाल हो गया। इस घटना के बाद काफी वर्ष बाद चित्रकार के मन में अत्यंत दुष्ट व्यक्ति का चित्र बनाने का विचार आया। वह ऐसे व्यक्ति की खोज में निकला जिसके चेहरे से क्रूरता, धूर्तता और स्वार्थलिपसा का स्पष्ट प्रकटीकरण हो। उसकी खोज पूर्ण हुई, जहां एक कैदी उसकी सोच पर खरा उतरा। जब कैदी ने उससे अपना चित्र बनाने का कारण पूछा तो उसने अपना पहला वाला चित्र उसे दिखाकर कहा- अब मैं इसके ठीक विपरीत चित्र बनाना चाहता हूं। उस पहले वाले चित्र को देखकर कैदी फूट-फूट कर रो दिया और बोला- यह चित्र मेरे ही बचपन का है। चित्रकार ने अश्चर्य से पूछा- तुम इस स्थिति में कैसे पहुंचे? कैदी का जवाब था- कुसंगति।

सच ही है भले लोगों का साथ जीवन को सकारात्मकता से भर देता है और बुरे लोगों की संगति नकारात्मकता की ओर ले जाती है।

अलोचना हितकर है

मनुष्य अपनी प्रशंसा का इतना गुलाम होता है कि उसे वही जन प्यारे लगते हैं, जो उसकी प्रशंसा करें। थोड़ी सी अलोचना सुनकर मनुष्य आग बबूला हो जाता है। हितकारी से हितकारी भी अपना शत्रु नज़र आने लगता है।

परन्तु यदि हम गहराई से सोचें तो अलोचना अकसर हमारे लिए हितकर भी होती है। अलोचना करने वालों से हमारी उतनी हानि नहीं होती, जितनी हानि हमारी चाटुकारिता करने वालों से होती हैं। झूठी प्रशंसा करने वाले तो अपके पैर ही जमीन पर नहीं रहने देते। परन्तु अलोचना भी दो प्रकार की है। नकारत्मक वा सकारत्मक।

जब हम किसी को केवल नीचा दिखाने के लिए उसकी पीठ के पीछे किसी की निन्दा करते हैं तो वह सुधारत्मिक नहीं होती, हमारे अपने अंह की तृप्ति होती है और जिसकी अलोचना की जाती है, उसका उसे एहसास तक नहीं होता।

एक बार समय था, जब मैं पहली बार प्रतिनिधि सभा की मैंबर बनकर प्रतिनिधि सभा में आई थी और यह पहली मींटिग थी। उसमें एक माननिय कर्मचारी ने खड़े होकर किसी अलोचना कारी का पत्र पढ़ा, जिसमें प्रबन्ध की कई कमियों को उजागर किया था, वह सबसे वरिष्ट और उमर में भी सबसे बड़े महानुभाव पत्र पढ़कर बहुत दुखी हुए कि यह बहुत बहूदा हरकत है। अपने ही जन हमारी इस प्रकार अलोचना करें, यह उनको सहन नहीं हो रहा था।

मैंने काफी हौसला किया और मैंने खड़े होकर प्रार्थना की कि मैं इस विषय पर कुछ बोलने की आज्ञा चाहती हूँ, तो सभापति जी ने आज्ञा दी तो मैंने प्रार्थना की कि मैं भी एक संस्था की हैड हूँ, और ऐसे अलोचनात्मिक पत्र अकसर आते रहते हैं, जिन पर कोई नाम नहीं होता, हमारा स्टाफ कई बार घबरा जाता है, तो मैंने उन्हें एक असूल बताया कि जब कोई आपको ऐसे पत्र लिखता है, तो पहले देखो कि क्या उसकी लिखी बातें सत्य हैं, जो कमियां उसने हमारी लिखी हैं, क्या वाक्या ही वह कमियां या गल्तियां हुई हैं, यदि हुई हैं, तो उन्हें पूरे मन से सुधारो और उसको धन्यवाद दो, यदि उसने केवल अलोचना करने के लिए ही लिखा है, और वह बातें हुई ही नहीं तो इसको Ignore करो, upset होने वाली कौन सी बात है।

मैंने प्रार्थना की कि हम मनुष्यात्मा हैं, हमसे गल्तियां होंगी और उसका बुरा प्रभाव हमारी समाज पर पड़ेगा, यदि अलोचनाकर्ता की बातें सही हैं, तो उन्हें सुधारने की कोशिश करें, यदि गल्त हैं, तो उसे छोड़ दो।

मुझे लगा कि अधिकतर मैंबर इस बात से सहमत थे। कुछ दिनों के बाद विशेष सम्मान के योग्य परलोक वासी श्रीमान गुरूसेवक सिंह जी का प्रशंसा पत्र मिला, उन्होंने लिखा कि "Your maiden speech was excellent" (आपकी पहली ही तकरीर बहुत बहुत शानदार थी) और उन्होंने बहुत प्रशंसा की।

तो यह हम पर निर्भर करता है कि हम अलोचना को किस रूप में लेते हैं। वास्तव में बहुत सारी अलोचनाएं हमारे हित में होती हैं। परन्तु बहुत कम लोग मिलेंगे जो अलोचनाओं को सकारत्मक रूप से लें, और उनसे अपने में सुधार करने का प्रयत्न करें, कई जन तो अपनी वा अपने अधीन जनों वा संस्था की सच्ची कमी को सुनकर अलोचना कर्ता के प्रति शत्रुता का व्यवहार करने लगते हैं। ऐसे जनों को अपना वा अपने सम्बन्धी जनों का, और संस्था में कोई तनिक भी दोष नज़र नहीं आता सुधार होने की कोई गुंजाईश ही फिर कहां रहती है।

वास्तव में यदि कोई जन आपकी सच्ची बात की अलोचना करता है, तो समझें यह आपमें सुधार करने में आपकी सहायता कर रहा है। इस बारे में डेविड लूथर ने कहा था:-

"जो लोग अपनी अलोचनाओं को सकारात्मक रूप मे स्वीकारते हैं, वही वास्तव में आत्म सुधार में दिलचस्पी रखते हैं।"

जैसे आईना हमारे चेहरे के दाग धब्बे दिखाता है, वैसे ही अलोचना कर्ता हमारी कमियों को (यदि वह कमियां सच्ची हैं) तो उजागर करके हमे सुधरने का अवसर देता है, शर्त है कि यदि हमें उससे लाभ उठाने की कला आती हो। एक स्वामी के शब्द पढ़े थे "एक सफल व्यक्ति वह है, जो दूसरों द्वारा खुद पर फैंकी ईटों से एक मजबूत नींव खड़ी कर सके"

अब अलोचना करने के भी दो पहलु हैं, एक जब कोई आपकी अलोचना करता है, दूसरा जब आप किसी की अलोचना करते हो।

जब कोई आपकी अलोचना करता है, तो

० क्रोध न करें, उसकी बात को ध्यान से सुनें वा पढ़ें, उसको अपना हितैषी समझें शत्रु नहीं।

० सामने वाले ने आपकी जिन कमियों का ज़िकर किया है, उस पर गंभीरता से विचार करें, उन्हें सुधारने का पूरा प्रयत्न करें।

० अपने अंह में सुनी अनसुनी न करें, प्रत्येक मनुष्य में कमिया हैं, उस अलोचना को अपना अपमान व समझें।

० झूठी प्रशंसा के प्रलोभन में न आंए, सोचें और समझें कि सामने वाला व्यक्ति आपकी इतनी प्रशंसा क्यों कर रहा है। उसकी झूठी प्रशंसा सुनकर अपने आपको सर्वश्रेष्ट समझने की ग़ल्ती कभी न करें।

जिस तरह करेला, कोनीन और नीम कड़वा हो कर भी हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभ कारी होता हैं, वैसे ही अलोचना हमें असहनिय लगती है, परन्तु अधिकार सूरतों में वह हमारी कमज़ोरियों का आईना होता है जब हमने किसी की अलोचना करनी हो तो हमे निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:-

० प्रत्येक मनुष्य में कमियों के साथ साथ कुछ न कुछ गुण भी अवश्य होते हैं, तो यदि आप उनके किसी सच्चे गुण की प्रशंसा करके, उन्हें उनकी कमी को बताएं, तो उस जन के लिए अपनी अलोचना सुनना आसान हो जाएगा।

यह बात मुझे एक रिटायरड प्रिंसीपल ने बताई जब मैं 28 वर्ष की छोटी उमर में चन्डीगढ़ के स्कूल में प्रिंसीपल बनकर आई थी। उन्होंने

फरमाया कि "बीबी, आपको बच्चों से बहुत शिकायतें होंगी, आप माता पिता को उनकी शिकायत करोगे, तो याद रखो कि बच्चे की शिकायत बताने से पहले बच्चे की किसी अच्छी बात की तारीफ करो, फिर उसकी ग़ल्ती बताओ, (जैसे आपके बच्चे का व्यवहार बहुत अच्छा है, परन्तु पढ़ाई में कमज़ोर है आदि आदि) इससे माता पिता को और बच्चे को अपनी ग़ल्ती सुधारने का उत्साह मिलेगा।

० किसी की अलोचना करने के लिए सामने वाले के लिए कटु शब्दों का प्रयोग न करें। कठोर शब्दों से कही हुई बात नकारात्मक हो जाती है।

० किसी की भी अलोचना अकेले में की जाए, सबके सामने कहने से वह जन अपमानित अनुभव करता है।

० अलोचना करने का यह अर्थ भी नहीं है कि आप सामने वाले का सुधरने का उत्साह ही ख़त्म कर दें।

उस जन को ग़ल्ती का एहसास दिलाकर, उसे सुधारने की ओर प्रेरित करना, आपका लक्ष्य होना चाहिए।

आलोचना सुनना और अलोचना करना दोनों ही एक कला है, यदि इसका सही प्रयोग हो तो बहुत सुधार हो सकता है। परन्तु दोनों ही सूरतों में बहुत धैर्य की आवश्यकता है।

ऐसे महान पुरूषो की बहुत सी घटनाएं हैं, परन्तु इब्राहिम लिंकन जो अमरीका के एक विशेष वा महान राष्ट्रपति थे उनके जीवन की अनेक घटनाएं हैं, जो दर्शाती हैं कि उनकी बेहद निन्दा वा अलोचना करने वाले जनों को भी उन्होंने उनकी विशेष योग्यता को देखकर ऊंचे पदों पर रखा और आख़िर उनसे प्रशंसा भी प्राप्त की। केवल एक घटना का ज़िकर यहां कर रहे हैं: -

इब्राहिम लिंकन ने युद्ध के मन्त्री ऐडवर्ड. एम, स्टैंटन थे। वह इब्राहिम लिंकन का न केवल सम्मान ही नहीं करते थे, बल्कि बहुत अपमान करते थे, परन्तु बहुत योग्य युद्ध मन्त्री थे।

एक बार तो उन्होंने लिंकन को डैम फुल (महा मूर्ख) शब्द से भी सम्बोधित कर दिया। स्टैंटन को लगता था कि वह उसके महकमे में ग़ल्त दखलअन्दाजी करते थे। लिंकन ने किसी रैजमैन्ट की बदली के आर्डर कर दिए थे। स्टैंटन ने उस आर्डर पर अमल करने से इन्कार कर दिया।

जब लिंकन को बताया गया कि स्टैंटन ने उन्हें महामूर्ख कहा है, तो उन्हेंने बहुत शान्ति वा ठण्डे मिजाज से जबाब दिया कि "यदि स्टैंटन ने ऐसा कहा है, तो मैं खुद जाकर पता करता हूँ।" लिंकन जाकर स्टैंटन को मिले। स्टैंटन ने यकीन दिलवा दिया कि वह आर्डर ग़ल्त था। लिंकन ने झट वह आर्डर वापिस ले लिया। लिंकन अपनी अलोचना का सदा स्वागत करते थे, जब कि अलोचना ज्ञान पर आधारित, सच्चे दिल से वा सहायता की भावना से की जाती थी।

हम सबको अलोचना का स्वागत करना चाहिए। इसके बिना उन्नति वा सफलता प्राप्त नहीं होती।

सुरजीत बराड़

आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखाती है

मेरे पूजनीय सत्गुरू!

मैं जीवन व्यतीत करता था, परन्तु मैं जीवन की फिलासफी, आत्मिक शक्तियों का महत्त्व, तथा नीच प्रकृति की बेलगाम ताकतों - जिन्हें मैंने अपने अन्दर बढ़ा लिया था, और जो मुझे जंगली पशु बना रही थीं - के खतरों से अनजान था। पूर्ण स्वार्थी जीवन व्यतीत करने और दुनियां को अपनी नीच रुचियों की तृप्ति का अखाड़ा बनाने की अपनी भायनक छवि मुझे भयभीत नहीं करती थी। मेरी बेलगाम नीच रुचियां मुझे दूसरों के लिए हानिकारक और दुखदायक बनाती थीं, मेरे दूषित विचार मुझे दूसरों के अधिकारों का अपहरण करने की तरफ ले जाते थे। परन्तु मुझे उनका पता कुछ नहीं था। उन घृणित विचारों और कामों की लड़ी अब अपने असल घृणित रूप में मेरे सामने आ रही है। आपकी ज्योति ने मुझे अपनी पिछली तस्वीर दिखा दी है और मैं। लज्जित हो रहा हूं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मैं एक जंगली जानवर का जीवन व्यतीत करता था। अहंकार के अधीन होकर मैं अपने उपकारियों का भी अपमान करता था। मेरे ऊपर ग़लत ताकतों का राज्य था और दूसरों के सम्बन्ध में मैं ग़लत जाता था। मेरा आत्मा खतरनाक, हानिकारक और विषैले फल पैदा करता था। हाय! मेरी कैसी दशा होती, यदि मैं उसी पथ पर चला चलता। परन्तु आपकी ज्योति ने मेरी उद्ण्ड नीच प्रकृति का हानिकारक रूप मुझे दिखाया है और कम से कम कुछ पतनकारी रूचियों से मेरे भीतर घृणा पैदा कर दी है। मैं उनसे बच गया हूं। मुझे उनके भयानक नतीजों से बचा लिया गया है। अब मैं आपको ज्योति स्त्रोत जान कर पथ प्रदर्शन प्राप्त करने के लिए आपके चरणों की ओर दौड़ता हूं। आपने एक सीमा तक मेरे भीतर सच्ची सहानुभूति, सच्ची बन्धुता, सच्चा सेवाभाव और उच्च संगत की भूख पैदा की है। मैं बुरी संगत - चाहे वह इस दुनियां के बड़े से बड़े लोगों की भी क्यों न हो - के भयानक फलों को देखने के योग्य हो गया हूं। मैं उनसे परे रहता हूं। मैं प्रतिदिन आपके दर तक पहुंचता हूं और वह बरकतें पाता हूं जिनका मैं वर्णन नहीं कर सकता। वह आनन्द और स्वर्गीय सुख अनुभव करने की वस्तु है, बयान करने की नहीं। मेरा जीवन एक सीमा तक सुन्दर बन गया है। आपने इसे हितकर बना दिया है। काश! मेरा दिल सदा श्रद्धा से आपके चरणों में झुका रहे।

आपकी ज्योति हमें होश की अवस्था में रखती है

मेरे पूजनीय सत्गुरू!

आपकी ज्योति महा अमूल्य है, क्योंकि वह मनुष्य को होश की अवस्था में लाती है। मनुष्य आत्मा जो नीच रुचियों और नीच अनुरागों तथा अंहकार कर विकृत शक्तियों के आधीन हैं, अपना

बहुत सा समय धोखे में गुज़ारते हैं। ऐसी अवस्था में वह होश जिसमें सच्चाईयां अपने असल रूप में दिखाई देती हैं, सम्भव नहीं है। अपनी ज़ात को ऊंचा समझना, जबकि वास्तव में बात इसके उलट प्रतीत होती है, निपट पागलपन है। विवाह, मृत्यु तथा अन्य अवसरों पर अपने घंमड को तृप्त करने के लिए हज़ारों रुपए खर्च करना और भले काम के लिए दान देते समय दिल में दुख महसूस करना, पागलपन के सिवाए और कुछ नहीं। केवल धन की खातिर धन इकट्ठा करना और इसी को जीवन का लक्ष्य बनाना पागलपन है। अपने बच्चों को आसमान से उतरे हुए और दूसरों के बच्चों को उनसे घटिया समझना, चाहे सच्चाई उसके उलट ही हो, धोखा और पागलपन है। अपने अनाधिकारी बालिग बच्चों के लिए धन छोड़ जाने के लिए धन एकत्र करना, जबकि वह बच्चे अपने पावों पर खड़े होने के योग्य हों, और एक हितकर समाज या मनुष्य मात्र की भलाई की परवाह न करना, जबकि उनका नैतिक हक अधिक हो, पागलपन और उलटी दृष्टि है। मिथ्या विश्वासों को निजी वस्तु समझ कर उनके साथ चिपके रहना और दलील, परीक्षा या तजरबे की अपील को परे फैंकना एक धौखा और पागलपन की बात है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण दिए जा सकते हैं।

भगवन्! मैं देखता हूं कि लाखों मनुष्य धोखे में ही जीवन व्यतीत करते हैं। वह असलियत से परे जीवन व्यतीत करते हैं और इसी अवस्था में मर जाते हैं। जिन्हें आपके श्री चरणों मे आने और आपके देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न देव प्रभावों को पाने का अधिकार मिलता है, वह जानते हैं कि आपके श्री चरणों में रहना कैसा सौभाग्य है। आपकी ज्योति के प्रकाश में यह धोखे दूर होने आरम्भ होते हैं। नीच रुचियां और नीच अनुराग तथा अंह सम्बन्धी शक्तियां, जो बढ़ते बढ़ते आत्मा के रोग बन गए हैं, उन उच्च शक्तियों से नष्ट होने लगते हैं कि जो उच्च शक्तियां आप अधिकारी मनुष्यों में पैदा करते हैं। यही कराण है कि जब तक यह होश की अवस्था कायम रहती है, आपके तुच्छ सेवक आपकी महिमा के गीत गाते नहीं थकते। उनके इर्द गिर्द के लोग उन्हें पहले से पूर्णत: भिन्न और आदर के योग्य देखने लगते हैं। मैंने भी आपके चरणों में बहुत लाभ उठाया है। आपने कुछ सम्बन्धों में मुझे होश की हालत में आने के योग्य बनाया है। इससे आगे आपने मुझे अपने उन नीच भावों को देखने के योग्य बनाया है, जो धोखा पैदा करते हैं और अब मैं जानता हूं कि मेरी अपनी शक्तियों पर यह भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह मुझे ठीक मार्ग पर ले जाएंगी।

सन्तान अनुराग का बोध

मैं आपकी रोशनी में प्राय: प्रतिदिन इन दो विषयों पर विचार करता रहा हूं: -

(क) काम अनुराग मूलक नीच बन्धन।

(ख) सन्तान अनुराग मूलक नीच मोह

अनुभव होता रहा है, वह यह है:-

(1) इस अनुराग से परिचालित होकर मैं अपने बच्चों के स्थूल शरीर को प्यार करता हूं। यह मुझे उनके आत्माओं की सम्भाल और रक्षा की ओर ले जाने की योग्यता नहीं रखता। इसलिए मैं अस्थिर और असार धरती पर चलाता हूं, क्योंकि एक तो उनके आत्मिक हित की ओर से अन्धा होकर मैं उनका उच्च कोटि का उपकारी नहीं बन सकता, दूसरे मैं उस वस्तु अर्थात उनके स्थूल शरीर को जिसे, सदा के लिए इस संसार में रखना असम्भव है, प्यार करता हूं। अत: मैं अपनी जिन्दगी रेत पर खड़ी करता हूं, और जब मुसीबतें आती हैं- कि जो अवश्य आती हैं- रेत की नींव खिसक जाती है, तब मानो मेरा सब कुछ लुट जाता है। यह अवस्था कैसी भयानक और कितनी शोचनीय!

(2) मुझे केवल उनके स्थूल शरीर ही दिखाई देते हैं। उनकी शारीरिक आवश्यकताएं या शरीरिक सुखों का अभाव जितना मुझे बेचैन करता है, उतना बेचैन मुझे उनकी आत्मिक आवश्यकताएं नहीं करतीं। इस से मेरा बहुत अनिष्ट हो सकता है। जैसा कि उन अनेक जनों का हुआ है जो बच्चों के लिए रुपया छोड़ जाने या उनके शरीरों के लिए सुख स्वाद के सामान जुटाने और उन्हें मानसिक शिक्षा देने के लिए उच्च वातावरण को छोड़ गए हैं और अपने बच्चों को भी उससे बाहर ले गए हैं। मुझे पता है कि कुछ अवस्थाओं में माता पिता की गलती के कारण बच्चे देव समाज को ही छोड़ गए हैं।

(3) यदि यह सन्तान का अनुचित प्यार बहुत बढ़ जाए, तो यह मुझे उच्च जीवन और पर-सेवा से दूर ले जाएगा और मेरा बहुत सा कार्यगत समय स्वार्थ पूर्ति में व्यतीत होगा और मैं खुशी खुशी नीच वस्तु के लिए श्रेष्ठ वस्तु की कुरबानी कर दूंगा।

(4) यह मुझे अन्यायकारी (unjust) और (unfair) बनाता है।

(5) इसके अधीन रहकर मुझे अपने बच्चों क तो पहाड़ जैसे दोष भी कम दिखाई देते हैं और दूसरों के छोटे दोष भी पहाड़ जितने लगते हैं। इस प्रकार मेरी देखने की ताकत पर परदा छा जाता है।

(6) सन्तान का प्यार नीच आत्माओं को मेरा मालिक बनाता है जो कि एक भयानक स्थिति है।

(7) जितने अंश यह मोह बलवान होता है, उतने ही अंश आपके साथ मेरा सम्बन्ध कमज़ोर होता है। मैं इसे अपना बड़ा दुर्भाग्य समझता हूं।

(8) उच्च जीवन में मेरा विकास खतरे में पड़ जाता है। मैं अब इस अंग में अपने आपको अधिक रोशनी में पाता हूं। और अभी कई महीने और कई वर्ष मैं इस पर चिन्तन करूंगा। सम्भव है, आपकी शक्ति पाकर मैं इन नीच अनुरागों से ऊपर हो सकूं।

(एक पुराना पत्र)

अंधविशवास का महाकुंभ

10 साल की पल्लवी टीवी पर महाकुंभ पर आ रहे कार्यक्रम को देख कर अपनी दादी से पूछती है, "क्या महाकुंभ में जो व्यक्ति 30 बार डुबकी लगाएगा उस के सारे पाप धुल जाएंगे? दादी, यदि ऐसा है तो मेरी मम्मी को भी वहां डुबकी लगाने को कहो न, उन्हें कैंसर है, ठीक हो जाएंगी।"

ऐसा तुझ से किस ने कहा कि महाकुंभ के अवसर पर गंगा में डुबकी लगाने से सारे रोग दूर हो जाते हैं?" दादी ने पल्लवी से सवाल किया।

"दादी, पापा कहते हैं कि टेलीविजन पर जो समाचार आते हैं वे झूठे नहीं होते। अभी मैं ने टेलीविजन पर महाकुंभ के बारे में बहुत सी खबरें सुनी और देखी हैं, क्या यह सच है कि विष्णु घाट में स्नान करने से आदमी करोड़पति हो जाता है? मुझे भी ले चलो, मैं डुबकी लगा कर करोड़पति बनना चाहती हूं।"

यह तो एक बालमन की जिज्ञासा है, लेकिन उन चैनल वालों को आप क्या कहेंगे जिन्होंने महाकुंभ का बखान कर के अंधविशवास का बाजार खड़ा कर दिया। समाचार ऐसा कि लाखों लोगों ने यकीन भी कर लिया कि इस महाकुंभ में पांचों घाटों पर डुबकी लगाएंगे तो उन से सारे पाप तो धुलेंगे ही साथ ही वे रोगमुक्त भी हो जाएंगे जबकि वैज्ञानिक रूप से सच यह है कि जो गंगा स्वयं प्रदूषण के रोग से पीड़ित है वह भला दूसरों के रोग दूर करेगी।

समाचार चैनलों की बातों पर भरोसा कर के महांकुभ में करोड़ो लोग ने नारायण घाट पर डुबकी लगाई तो क्या सभी मालदार हो गऐ? वैसे देखा जाए तो ऐसी खबरों से शिक्षित व्यक्ति भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते, इसलिए कि सभी समाचार चैनल बाजारवाद के दौर में धर्म के संस्कार पर आंडबर का मुलम्मा चढ़ा कर अंधविशवास के ब्रांड तैयार करते हैं। अंधविशवास एक ऐसा बाजार है जहां धर्म के नाम पर भाग्य बेचने वालों का हुजूम है। बाबाओं का तो यह बाजार है ही, ऊपर से समाचार चैनल भूसे पर राख सजाने का काम कर रहे हैं। यही वजह है कि शिक्षित लोग भी गंडातावीज वाले बाबाओं और श्रीश्री 1008.... वाले महात्माओं से प्रभावित हुए बगैर नहीं रहते।

अनपढ़ तो रोज ही अंधविशवास की चादर ओढ़ता और बिछाता है। चैनलों ने पूरे देश में जम कर अंधविशवास का अंधेरा फैलाया है। महाकुंभ के अवसर पर नहाना एक धार्मिक परंपरा है, लेकिन खून को जमा देने वाली कड़ाके की ठंड में अलगअलग घाट पर जा कर नहाने से अलगअलग पुण्य और लाभ के लालच जिस तरह चैनल वालों ने दिया उस से लाखों के मन में अंधविशवासी अंधेरा और गहरा गया जबकि सचाई यह है कि दांत किटकिटाने वाली ठंड में कोई बुजुर्ग 20 डुबकी लगाएगा तो उस की जो हालत होगी उस का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है।

हरिद्वार पहुंचो तो वहां पुण्य बेचने वाले अलगअलग रूप में मिलेंगे। हर घाट पर नहाने के बाद दान करो दूध चढ़ाओ। सोने और चांदी के बने रथ का दान करने से सीधे स्वर्ग मिलता है। ठंड से कोई मर गया तो उन के वचन सुनिए, 'बड़ा भाग्यशाली था जो हरिद्वार में आ कर मरा। सीधे बैकुंठ जाएगा। उस से घर वालों को चाहिए कि खुशी में हर घाट पर कम से कम 21-21 ब्राह्मणों को भोजन कराएं और दिल खोल कर दान करें, इस से मरने वाले की आत्मा को शांति मिलेगी और

स्वर्ग में खुशियां।'

चौंकाने वाली बात यह है कि मरने वाले के परिजन साथी की मौत पर परेशान हैं, इस से बाबाओं को कोई मतलब नहीं, उन्हें मतलब सिर्फ भोजन और दानदक्षिणा से है। साथी की मौत पर बेवजह परेशानी हुई, ऐसी बात पर नागा साधु कहते हैं, "महाकुंभ में ऐसा कुछ कहोगे तो पुण्य की जगह पाप के भागी बन जाओगे। उस के लिए फिर अलग से पूजापाठ और हवन करना होगा।"

एक बाबाजी प्रवचन दे रहे थे, 'लोभ मत करो, दयालु क्षमाशील बनो।' भक्त उन की वाणी के रस में डूब कर उन के प्रवचन सुन रहे थे लेकिन बीचबीच में बाबा की नजर चढ़ावे पर जाती और चढ़ावा को देख कर बाबा अपने शिष्य को लाल आंखे दिखाते। महाकुंभ में हर बाबा के दरबार में ऐसा होता देखा गया है।

इस महाकुंभ में हाईटेक और टेक्नोलोजी शैली के बाबाओं की धूम है। ये सेटेलाइट फोन रखते हैं। ए.सी. कारों और हवाईजहाजों मे चलते हैं, फाइव स्टार होटलो में रुकते हैं। करोडों की संपत्ति के मालिक हैं। आज देश में एक नहीं कई शंकराचार्य हैं। चांदी के सिंहसन पर बैठते हैं। माया लोभ से दूर रहने की शिक्षा देने वाले कथित शंकराचार्य, पदवी के लिए कोर्टकचहरी तक पहुंचते हैं।

दरअसल, हाईटेक दौर में बाबा भी चैनल वालों को अपनी कवरेज करने के लिए भारी भरकम रकम अदा कर रहे हैं। जो भी बाबा पैसा दे कर चैनल पर आ रहे हैं उन का काम ज्ञान बांटना नहीं, बल्कि धर्म के बाजार का दोहन कर पैसा कमाना है। यही वजह है कि चैनलों पर आजकल बाबाओं की होड़ लगी हुई है।

चैनल वाले भी उसी बाबा को लाइव दिखाते हैं जिस का भव्य पंडाल होता है और भीड़ होती है। बाबा भी जानते हैं कि आजकल विज्ञापन के बिना भक्त भी नहीं जानते कि कौन बाबा चमत्कारी है, ज्ञानी है, किस से दरबार में बड़ेबड़े राजनीतिबाज आतेजाते हैं। इस के लिए भक्त टेलीविजन खोल कर देखते हैं और फिर तय करते है कि किस बाबा के पंडाल में बैठाना है।

महाकुंभ हो या अर्द्धकुंभ, हर बाबा पूरी योजना के साथ चैनल पर आता है, ताकि किसी दूसरे बाबा से उस का जलवा कम न रहे। कोई अपनी कला का प्रदर्शन कांटों पर लेट कर करता है, कोई अपनी लंबी जटाओं का प्रदर्शन कर के, कोई कड़ाके की ठंड में निर्वस्त्र रह कर आदि। हर बाबा की वेशभूषा, शूटिंग के लिए सेट, स्क्रिप्ट और कांसेप्ट अलगअलग हैं। इन बाबाओं के बाजार में असली संतमहंतों की पहचान मुश्किल हो गई है। त्याग, तपस्या, माया सब कहने की बातें हैं, धर्म के बाजार मे भक्तों को लूटने की कला का नाम आस्था है महाकुंभ में जितने भी बाबाओं के पंडाल लगे हैं सभी के नाम के आगे श्रीश्री 1008..... फलाने बाबा, महाराज, महात्मा, आचार्य जैसे विशेषण लिखे हुए हैं। यानी जो जितना बड़ा शातिर वह उतना अड़ा संत है।

महाकुंभ में एक बाबा बोल रहे थे, "शिष्यो, तुम जिसे पाप कहते हो वह पाप नहीं दुनिया की रीति है। भक्तो, कुछ धार्मिक उपदेशकों ने पाप का नाम दे कर तुम्हें छला है। सचाई है कि पाप तो उन के मन में है जो पाप पाप कह कर दूसरों की कमाई पर नजरें गडाए होते हैं। पाप और पुण्य तो ईश्वर की लीला है।"

महाकुंभ में नागा साधुओ के पास पुरुषों की भीड़ कम होती है। इसलिए कि पुरुषों से उन की जमती नहीं। न जाने कौन नागा कब गोली या तलवार मार दे। कहने को नागा साधु

दुनियां से जुदा होते हैं लेकिन वे गांजा, अफीम, चरस आदि विभिन्न तरह के नशे के आदी होते हैं। हर तरह के हथियार इन के पास होते हैं। कपड़े नहीं पहनेंगे लेकिन दुनिया की हर सुखसुविशा के भोगी होते हैं। विदेशी महिलाओं के ज्यादा रसिक होते हैं।

नागा साधु के एक भक्त ने बताया कि नागा साधु कोई चमत्कार नहीं करते एक ही वातावरण में रहने और एक तरह की क्रियाएं करने से उन का शरीर अभ्यस्त हो जाता है। उन के लिए वह क्रिया साधारण लगती है जैसे कांटों पर सोना, आग पर चलना, गले तक पानी में घंटों डूबे रहना, गरमी में गरम बालू पर लेटे रहना आदि। नागा साधु ऐसा करते हैं तो लोगों को चमत्कार लगता है और उन के सामने भक्त पैसे डाल कर अपनी श्रद्धा दिखाते हैं।

अभ्यास द्वारा मंझे हुए नागा बाबाओं के इस तरह के नाटकों से उन की अच्छी कमाई के लिए महांकुभ एक अच्छा मंच साबित हो रहा है।

महाकुंभ में पुण्य बेचने की होड़ में और अपनेअपने तरीके से श्रद्धालओं की जेबें हलकी करने में सभी लगे हैं। अपनी जेबें भरने वाले इन लोगों का भी गंगा को प्रदूषित करने में कम योगदान नहीं है। कभी शुद्धता और पवित्रता की मानक रही गंगा का पानी आज पीना तो दूर, नहाने के भी काबिल नहीं रहा।

फ्रांसीसी वैज्ञानिक ई.एच. हैकिन ने 1896 में गंगोत्तरी से ऋषिकेश तक के पानी की जांच कर के बताया था कि गंगाजल में 5 ऐसे सूक्ष्म जीवाणु हैं जो प्रदूषण फैलाने वाले जीवाणुओं को खा जाते हैं। यही वजह है कि गंगा का जल लंबे समय तक खराब नहीं होता। इसे पीने से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

लेकिन यह सब अब खत्म हो चुका है। कई स्थानों में गंगा कैद है। कई स्थानों में गंगा सूख गई है। 1995 में दानापुर से पटना तक गंगा की धारा कहीं दिखी नहीं। वाराणसी के घाटों पर गंदगी का अंबार है। कानपुर में तो स्थिति और भी खराब है। यही हाल इलाहाबाद में हैं जिस शहर से गंगा बही वहां आज गंगा स्वंय उद्धार की उम्मीद लगाए है। अंधविश्वास के महाकुंभों के स्थान पर ऐसे महाकुम्भों की जरूरत है जो गंगा के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए क्रियाशील हों। पर फिर बाबा लोगों की कमाई का क्या होगा?

(सरिता मार्च 2010)

शुभ संग्राम

अमरीका में शुभ संग्राम

जैसे पाठको को पता है प्रति वर्ष श्रीमान बलदेव सिंह जी और माननिय श्रीमती प्रिंसीपल सुरजीत बराड जी जून, जुलाई में अमरीका जाते हैं। वहां पर प्रति वर्ष की तरह कई प्रकार का संग्राम श्रीमान जी करते रहते हैं। बीबी अर्चना जी अरोड़ा, और उनके बच्चों के साथ श्रीमान बलवन्त राए जी अरोड़ा के साथ, श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी चहल, और उनके बच्चों के साथ, श्री सुशील जी डावर आदि के साथ फोन पर हितकर बातचीत होती रही। श्रीमती डा० सतिन्द्र ढिल्लों भी 10 दिन वहां पर रही। एक एक जगह पर कई हितकर प्रस्तकें भेजी गई। कई जनों को सत्संग रखने के लिए प्रेरित किया गया। श्री सुशील जी डावर ने अख़बार आदि

के लिए 100 डालर भेजे। श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी ने अपना नियत दान और एक भेंट भी भेजी। कई 'धर्म जीवन' के नये ग्राहक भी बनें।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने Indianapolis में रहकर अपने बेटे डाक्टर देव अनुरुप बराड़ के परिवार को लेकर 4-5 ईतवार को सभा करवाई। एक Bi-Monthly पत्रिका अंग्रेजी में सेहत के ऊपर बेटा अपनी कम्पनी में छपवाता है, जो लाख से ऊपर गिणती में छपती हैं, उसमें कुछ गुरू महाराज की बाणी छपाने के लिए दी और यह सिलसिला आगे भी चलाने का प्रोग्राम बनाया।

इस बार सहायकारियों की सहायता से कुछ अमरीकन नौजवानों पर भी संग्राम करने का विशेष अवसर मिला। और यह सिलसिला आगे भी चलने की आशा बनी है।

एक नौजवान को मिला गया। यह मिलने से पहले भी शराब छोड़ने के संग्राम में था और शराब छुड़ाने वाली सोसाईटी AA की मीटिंगज़ भी attend कर रहा था। उसको और उत्साहित किया और बार बार मिलने की प्रेरणा की खुशी की बात है कि वह कोई तीन हफते लगातार मिलने आता रहा और श्रीमान जी के पास बैठकर संगत करता और हितकर बातचीत करता रहा। कई बार दो तीन और चार घन्टे तक भी बहुत ध्यान से शिक्षा को सुनता रहता था। जल्दी ही सत्य देव की जय भी बुलाने लगा। वह नोट बुक हररोज़ लाता और मुख्य नोट लिखकर भी ले जाता रहा। दिन-पर-दिन उसकी दिलचस्पी बढ़ती रही और वह श्रीमान जी भी कहने लगा। उसको उसकी अवस्था के अनुसार पुस्तकें दी गई। सरदार हरनाम सिंह जी की जीवनी, नेक जिन्दगी जो अंग्रेजी में थी, वह श्रीमान जी के वहां रहते ही उसने पढ़ ली थी। श्रीमान जी के पास एक किताब की केवल एक ही कापीं थी, उसने 4-4 कापियां फोटोस्टेट कर ली एक अपने लिए, एक अपने रिश्तेदार को दी, एक अपने और उपकारी के लिए और एक श्रीमान जी को दे दी। अपनी तरफ से खर्च करके खुशी प्राप्त की। उसको 5-6 और पुस्तकें भी पढ़ने के लिए दी, जिनको पाकर उन्होंने बहुत खुशी प्राप्त की।

यह खुशी की बात है कि उन्हेंने परम पू० भगवान देवात्मा की शिक्षा वा कारज़ के विषय में, उनकी रोशनी के बारे में बहुत दिलचस्पी से सुना, उनका कोई धार्मिक विचार इसके आड़े नहीं आया। वह अपने विश्वासों के विरुद्ध सुन सकते हैं।

श्रीमान जी को वह शराब छुड़ाने वाली सोसाईटी की एक मीटिंग में भी लेकर गए, वहां एक अच्छे साथी को भी मिलवाया। श्रीमान जी ने ऐसे परोपकार के काम में सहायक होने के लिए उन्हें मुबारक बाद दी। उन्हें दो अंग्रेजी की पुस्तकें भेंट की। वह भी एक दिन आकर श्रीमान जी से दो घण्टे बातचीत करते रहे। वह भी बातचीत से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पुस्तकें पढ़ने का Promise किया। वह 16 वर्ष से शराब से बचे हुए हैं। वह काफी उदार और आत्म सोझी के इच्छुक दिखाई दिए।

एक और नौजवान और उनकी होने वाली पत्नी को भी श्रीमान जी मिले। उस नौजवान से 4-5 बार बातचीत हुई। परन्तु उस पुस्तक को वह समझ नहीं सका, फिर थोड़ी सरल पुस्तक उसे दी गई। वह बहुत खुश हुआ। 24 वर्ष का नौजवान है। धार्मिक विश्वास गहरे हैं, परन्तु फिर भी बातचीत के लिए तैयार रहा।

खुशी की बात है कि पहले नौजवान को 2-1/2 महीने शराब से बचे हुए हो गए। उसकी श्रीमान जी को ई-मेलज़ भी आने लग गई हैं। वह श्रीमान जी का बहुत धन्यवादी महसूस करता है। पुस्तकें पढ़ रहा है। वह E-mail में सत्य देव की जय लिखता है। आशा है, कि उसका आगे भी रास्ता खुल सके। गुरू महाराज का शुभ आशीर्वाद प्राप्त हो।

चण्डीगढ़ में संग्राम :- श्रीमान बलदेव सिंह जी ने विदेश से वापिस आकर यहां ईतवार के साधन कराने आरम्भ किए है। उन्होंने 8, 15 और 22 अगस्त को ईतवार की सभाएं करवाई।

8 अगस्त ईतवार की सभा में बताया गया कि हम गुरू महाराज के सेवक कहलाकर भी उनको दुख देते है उनका अपमान करते हैं। इस प्रकार उनके दोषी वा अपराधी बनते हैं। ऐसा कुछ करके भी हमें पता नहीं लगता कि हम ऐसा कब और कैसे कर जाते हैं।

आगे बताया गया कि गुरू महाराज ने यह रोशनी ज़ाहिर की कि सब मनुष्य अन्धेरे के जीव हैं और सदा अन्धेरे में ही रहते हैं। हम मोटे पाप छोड़कर भी अपने आपको बहुत महान बनकर भी, प्रचारक वा उपदेशक बनकर भी हम अकसर अन्धेरे में ही रहते हैं। अपनी एक वा दूसरी नीचता को देखकर भी अन्धेरे में ही रहते हैं। देव रुप के गहरे रुप से अनुरागी होकर ही कुछ सन्तोष जनक अन्धेरा दूर होता है। अन्धेरे में होने के कारण हम परम पू० भगवान देवात्मा की रोशनी के मोहताज हैं।

22 अगस्त वाले ईतवार की सभा में बताया गया कि मनुष्य के जीवन की पूर्ण सफलता के लिए, जो पूर्ण अनुकूल और अति अवश्यक वातावरण है, वह केवल परम पू० भगवान देवात्मा की शरण में, उनके देवरूप में, उनके पू० देव शास्त्र और अन्य ग्रन्थों में, उन्होंने अद्वितीय देव प्रभावों द्वारा पैदा किए अन्य आत्माओं की संगत में प्राप्त है। जो व्यक्ति जब तक उक्त वातावरण के साथ जुड़ा रहता है, उसकी ज़रूरी रक्षा और भला होता है और जो उससे परे चला जाता है, उसकी हानि होनी आरम्भ हो जाती है।

सत्य धर्म बोध उत्सव के लिए निमन्त्रण कार्ड छापे गए और पोस्ट किए गए। कई धर्म सम्बन्धियों को फोन पर contact किया गया।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts